

Regarding the need to regularize the quantity, quality and prices of food items in dhabas, restaurants and hotels

श्री रवीन्द्र शुक्ला उर्फ रवि किशन (गोरखपुर) : सभापति महोदय, आपने जीरो ऑवर में लोक महत्व के इस मामले को उठाने की मुझे अनुमति दी, इसके लिए धन्यवाद । भारतवर्ष दुनिया का सबसे बड़ा आबादी वाला देश है । यहां छोटे-छोटे कस्बों से लेकर बड़े-बड़े महानगरों में लाखों ढाबे और होटल्स हैं । इनमें प्रतिदिन करोड़ों लोग भोजन करते हैं । ढाबों और होटल्स के स्थान और स्तर के अनुसार खाद्य पदार्थों के मूल्य ग्राहकों से लिए जाते हैं । आप यदि फाइव स्टार में बड़ा पाव खाएं तो उसका दाम अलग है और मुंबई में किसी अन्य जगह पर बड़ा पाव खाएं, तो उसका दाम अलग है । चांदनी चौक में समोसा सस्ता मिलता है, तो गोरखपुर के गोला बाजार में अलग दाम पर मिलता है । फाइव स्टार होटल में तो इसका रेट और भी ज्यादा हो जाता है । किसी भी ढाबे या होटल में किसी वस्तु की मात्रा क्या होगी, इसका मानकीकरण नहीं किया गया है । कहीं छोटी सी कटोरी में खाद्य पदार्थ दे दिया जाता है, कहीं बड़ा समोसा, तो कहीं छोटा समोसा मिलता है । आज तक यह हमें भी समझ नहीं आया । इतना बड़ा बाजार, जिसमें करोड़ों की संख्या में ग्राहक हैं, बिना किसी रूल और रेग्युलेशन के चल रहा है ।

महोदय, हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री जी ने पिछले 11 सालों में देश के विभिन्न क्षेत्रों में युगान्तकारी परिवर्तन किए, लेकिन अभी तक यह क्षेत्र अछूता है । किसी ढाबे में तड़का दाल 100 रुपये में तो किसी दूसरी जगह 120 रुपये में, कहीं पर ढाई सौ रुपये में तो कहीं पर चार सौ रुपये में तड़का दाल मिलती है । अतः मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि छोटे ढाबे से लेकर, सामान्य होटल्स, अच्छे रेस्टोरेंट्स, फाइव स्टार होटल्स आदि सभी स्थानों पर मिलने वाले खाद्य पदार्थों के मूल्य, गुणवत्ता व उनकी मात्रा निर्धारित करने वाला कानून बनाना चाहिए, ताकि देशवासियों को उचित मूल्य पर सही मात्रा में गुणवत्ता-युक्त खाद्य पदार्थ उपलब्ध हो सके ।